Rashtriya Sahara,1st December 2013-12-04

एड्स अपने आपमें कोई विशिष्ट रोग नहीं है लेकिन यह जिस तेजी से फैलता है, उसके कारण इसका खौफ बढ़ता जा रहा है। इसके शिकार व्यक्ति में किसी भी रोग से लड़ने की क्षमता बिल्कुल नष्ट हो जाती है और वह कई किस्म के रोगों का शिकार हो जाता है

नयनतारा हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं कि आज भी दुनिया में एड्स से ज्यादा खौफनाक कोई दूसरा शब्द नहीं है लेकिन प्रभावी अभियान ने इस शब्द के खौफ को काफी कम कर दिया है। यह दरअसल शरीर की दशा है। जिसकी व्याख्या उन शब्दों में छिपी है, जिन शब्दों के प्रथमाक्षरों (एक्वार्यड-एम्यूनो डिफीशिएंसी सिंड्रोम) से मिल कर 'एड्स' बना है। इसका मतलब है शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी हो जाना। एड्स के चलते शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता खत्म हो जाती है। एड्स आज मानव जाति के अस्तित्व पर खतरा बनकर मंडरा रहा है।

पहचान एड्स का पता 1981 में तब चला, जब कैलिफोर्निया के अस्पताल में पांच नवयुवक इलाज के लिए भर्ती हुए। ये सभी गंभीर रूप से निमोनिया से पीड़ित थे। हर संभव उपचार के बाद भी इनकी तबीयत बिगड़ती गई। सारे डॉक्टर खासकर, विशेषज्ञ परेशान हो गए। इन युवकों की गहराई से जांच की गई तो पता चला कि उनमें किसी भी रोग से लड़ सकने की क्षमता पूरी तरह नष्ट हो चुकी है। यही कारण है कि उनमें किसी तरह की कोई दवा कारगर नहीं हो रही। यह आश्चयजनक घटना थी क्योंकि इस तरह का निमोनिया केवल उसे होता है, जिसके शरीर का कोई अंग बदला गया हो। अंग बदलने के लिए शरीर की प्रतिरोधक क्षमता थोड़े समय के लिए समाप्त कर दी जाती है ताकि शरीर नये अंग को अस्वीकार न करे। कुछ प्रकार के रक्त कैंसर से पीड़ितों को भी इस प्रकार का निमोनिया होता है। ले किन आश्चय कि इन पांचों को न तो किसी प्रकार का रक्त कैंसर था और न ही उनका कोई अंग प्रत्यारोपित किया गया था। पांचों में एक समानता जरूर थी, ये सभी होमोसेक्सुअल यानी समलैंगिक थे। विस्तृत खोजबीन से पता चला कि ये सब नये किस्म के रोग के शिकार हैं, जिनका लक्षणों के आधार पर नाम दिया गया 'एक्वार्यड-एम्यूनो डिफीशिएंसी सिंड्रोम'

यानी एड्स। इसका मतलब यह हुआ कि ऐसा रोग, जिसमें व्यक्ति की किसी भी रोग से लड़ने की क्षमता बिल्कुल नष्ट हो जाए और वह कई किस्म के रोगों का शिकार हो मौत की आगोश में समा जाए।

दिल दहलाने वाला प्रसार पता चलते ही इसका आतंक छा गया क्योंकि इसके प्रसार की रफ्तार बहुत तेज है। इसकी तेजी का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि महज ढाई दशक पहले प्रकाश में आये इस रोग से पीड़ित लोगों की संख्या आज दुनिया में 5 करोड़ से ऊपर है। हर साल दुनिया में 5 लाख से ज्यादा लोग एड्स से मर रहे हैं। यूएन एड्स के मुताबिक, 2005 तक भारत में ही 5 लाख 90 हजार लोग एड्स से मर चुके थे मगर 2012 में इसमें कमी देखी गई है।

एड्स वायरस 1982 तक वैज्ञानिकों ने इस बात का पता लगा लिया था कि एड्स का कारण कोई जीवाणु या अन्य सूक्ष्म जीव नहीं है बल्कि इसका कारण विषाणु है। 1983 में पेरिस के पाश्चर संस्थान के वैज्ञानिक लुक मोंटागियर ने एड्स के वायरस को अलग करने का दावा किया। उन्होंने इसे एलएवी (लिम्फेडेनोपैथिक एसोसिएटेड वायरस) कहा। 1984 में अमरीकी वैज्ञानिक प्रो. रॉबर्ट गैलो ने भी एड्स के वायरस को ढूंढ़ निकालने का दावा किया। उन्होंने इसे एचटीएलवी-3 (ह्यूमेन टी- सेल ल्यूकेमिया वायरस टाइप-3) कहा। 1985 में दोनों वैज्ञानिकों ने अपने द्वारा खोजे गए इन वायरसों के विषय में लिखा, तब पता चला कि दोनों वैज्ञानिक एक ही वायरस को अलग-अलग नामों से पुकार रहे थे। ऐसे में, सवाल उठा कि फिर इसकी खोज का श्रेय किसे दिया जाए? मामला अदालत जा पहुंचा, बाद में वैज्ञानिक समुदाय के बीच समझौता हो गया। दोनों वैज्ञानिकों को खोज का बराबर श्रेय दिया गया और इस वायरस को नाम दिया गया-एचआईडीवी-1 (ह्यूमन डिफिशिएंसी वायरस टाइप-1)। 1986 में डॉ. मोंटागियर और उनकी टीम के पुर्तगाली वैज्ञानिकों ने लिस्बन में एक-दूसरे एड्स वायरस का पता लगाया। यह वायरस पश्चिमी अफ्रीकी देशों के रे गिस्तानों में पाया गया था। इसे एचआईडीवी-2 नाम दिया गया। बाद में अमरीकी वैज्ञानिक बीट्रिस एच हान ने अपने शो में चिम्पैंजियों की एक खास प्रजाति पैन ट्रोग्लोडाइट्स में पाये जाने वाले एचआईवी को मनुष्यों में होने वाले एचआईवी का पूर्वज करार दिया।

क्यों है इतना खतरनाक यह इंसान की रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत तेजी से खत्म करता है। किसी मानव शरीर में प्रवेश करने के बाद एचआईवी वायरस दो साल में ही अपना इतना विकास कर लेता है, जितना विकास करने में किसी अन्य वायरस को लाखों साल लग जाएं। इसके लिए वैक्सीन बनाना इसलिए मुश्किल हो रहा है क्योंकि यह बेहद चालाक, फुर्तीला और बहुरूपिया वायरस है। यह बहुत तेजी से नकल कर लेता है। लेकिन सभी नकल हमेशा एक-सी नहीं होतीं। परिस्थिति के हिसाब से यह अपना विकास करता है। सबसे बड़ी बात यह है कि यह वायरस किसी प्रतिरोधक से बचने के लिए आदमी की कोशिकाओं में स्थित गुणसूत्रों में अपने डीएनए की छाप

डाल देता है। यह जिंदा कोशिकाओं के भीतर छिप कर बैठ जाता है, जहां इसे मारने के लिए कोशिकाओं का खात्मा करना पड़ेगा। जिंदा कोशिकाओं को मारने का मतलब है मौत को गले लगाना। इसीलिए यह अब तक सबसे खतरनाक वायरस है।

कहां से आया वायरस इसे लेकर आज भी विवाद है कि एड्स शुरू कहां से हुआ? ज्यादातर वैज्ञानिक इसकी शुरुआत अफ्रीका से मानते हैं। अमेरिका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक हार्वर्डस एसेक्स के मुताबिक, एड्स अफ्रीका में पाए जाने वाले ग्रीन मंकी- बकरी जैसे हरे बंदर से मनुष्य में आया। एसेक्स के मुताबिक, चूंकि जार्यो में अमेरिका और हैती के बहुत लोग रहते हैं इसलिए यह वायरस इन लोगों में फिर इनके जरिये अमरीका तक पहुंचा गया। लेकिन अफ्रीकी वैज्ञानिक इसे सही नहीं मानते। उनके मुताबिक संभव है एड्स अमेरिका में पैदा हुआ हो और यहां के धनाढ्य समलिंगियों ने इसे अफ्रीका पहुंचा दिया हो। जारी पेज 2

क्या मिल गई दवा? 'बर्लिन रोगी' नाम से विख्यात टिमोथी ब्राउन 1995 में जर्मनी की राजधानी में छात्र थे जब उन्हें मालूम हुआ कि वह एचआईवी पॉजिटिव हैं। टेस्ट की खबर सुनते ही वह बुरी तरह से घबरा गए थे। लेकिन एक साल बाद यह संभव हो सका कि ब्राउन के एचआईवी का इलाज कॉम्बीनेशन ड्रग्स के जरिए किया जा सकता है। इसके कई साल बाद यानी 2006 में पता चला कि ब्राउन जबरदस्त मीलऑयड लुवेफमिया से भी पीड़ित हैं। उनके डॉक्टर ने स्टेम कोशिकाओं के बोनमैरो ट्रांसप्लांट का सुझाव दिया जिससे उनकी सफेद रक्त कोशिकाओं (इम्यून सिस्टम) की टी-सेल्स की संख्या बढ़ सके। डॉक्टर ने यह भी सुझाया कि डोनर ऐसा हो जिसमें सीसीआर5 जीन के प्रति प्राकृतिक म्यूटेशन हो। ट्रांसप्लांट से पहले ब्राउन के इम्यून सिस्टम को साफ करने के लिए पूरे शरीर का रेडिएशन किया गया था। जिस दिन उनका स्टेम सेल ट्रांसप्लांट किया गया था, उस दिन आखिरी बार उन्होंने एचआईवी की दवाएं ली थीं। अब उनके शरीर में एचआईवी का कोई लक्षण नहीं है। मतलब यह कि 'बर्लिन रोगी' एचआईवी पॉजिटिव था, लेकिन बो नमैरो ट्रांसप्लांट के बाद अब उसके शरीर में एचआईवी वायरस नहीं है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या एड्स का इलाज मिल गया? यह सही है कि ब्राउन ने एड्स को पराजित कर दिया है लेकिन उनके डॉक्टरों को मालूम नहीं है कि किस तरह से यह चमत्कार हुआ है। बहरहाल, एड्स शोधकर्ताओं का मानना है कि समय आ गया है जब अविश्वसनीय के विश्वसनीय होने पर विचार किया जाए। इसलिए ऐसे विशेषज्ञों की संख्या बढ़ती जा रही है जिन्हें यकीन है कि एचआईवी संक्रमण का इलाज अब वैज्ञानिक दृष्टि से असंभव नहीं है बल्कि एक ऐसा लक्ष्य है जिस तक वैज्ञानिक बहुत निकट भविष्य में पहुंच जाएंगे। जिस वैज्ञानिक ने एचआईवी की खोज के लिए नोबेल प्राइज शेयर किया था, उनका भी मानना है कि एचआईवी संक्रमण का इलाज संभव है। बेरे शैसी ने 1983 में अपने पेरिस स्थित पाश्चर इंस्टीट्यूट के सहयोगी लक मोंटीगिनेयर के साथ मिलकर एड्स वायरस की खोज को रिपोर्ट में पहली बार सार्वजनिक किया था। शैसी ने 'बर्लिन रोगी' का हवाला देते हुए कहा है कि एड्स का इलाज तलाशना जल्द संभव हो सकेगा।

ट्रांसप्लांट से पहले ब्राउन के इम्यून सिस्टम को साफ करने के लिए पूरे शरीर का रेडिएशन किया गया था। जिस दिन उनका स्टेम सेल ट्रांसप्लांट किया गया था, उस दिन आखिरी बार उन्होंने एचआईवी की दवाएं ली थीं। अब उनके शरीर में एचआईवी का कोई लक्षण नहीं है

अमरीका के हार्वर्ड विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक हार्वर्डस एसेक्स के मुताबिक, एड्स अफ्रीका में पाए जाने वाले ग्रीन मंकी (बकरी जैसे हरे बंदरों) से मनुष्य में आया

संयुक्त राष्ट्र के मु ताबिक, इस समय भारत में सरकारी आंकड़ों के मुताबिक 57 लाख एड्स रोगी हैं जिनमें सबसे बड़ी तादाद युवाओं और बच्चों की है

किसे हो सकता है यह उसको, जिसका किसी एड्स संक्रमित के साथ यौन संबंध हो। चाहे वह समलिंगी हो या विपरीत लिंगी। सं क्रमित एड्स वायरस से इंजेक्शन या सुई के इस्तेमाल से, चाहे नशे के लिए इंजेक्शन लेने से हो या किसी बीमारी आदि के इलाज के लिए। उसे, जिसे किसी एड्स संक्रमित व्यक्ति का रक्त चढ़ा दिया गया हो। पेट में पल रहे उस शिशु को जिसकी मां एड्स संक्रमित हो। मां के दूध से भी बच्चे में एड्स संक्रमण का खतरा बना रहता है। साथ ही, गहरे चुंबन से भी जिसमें मुंह के लार रक्त के कण आदि दूसरे के शरीर में पहुंच जाते हैं।

बचना है तो यौन संबंध सिर्फ अपने पार्टनर से रखें और कंडोम का इस्तेमाल करें। हमेशा नई डिस्पोजेबल सुई और सिरिंज का प्रयोग करें। जांचा-परखा रक्त ही शरीर में चढ़वाएं। सामूहिक रूप से सुइयों का इस्तेमाल न करें।

किन चीजों से नहीं होता संक्रमित व्यक्ति के छूने, खांसने या छींकने से एक साथ बै ठकर खाना खाने से एक ही टॉयलेट या बाथरूम के

इस्तेमाल से मच्छरों के काटने से गले मिलने से बशत्रे गाढ़ा चुंबन न लिया जाए आंसू, पसीना या मलमूत्र के संपर्क से संक्रमित व्यक्ति से टकरा जाने या साथ यात्रा करने आदि से '

जांच एड्स की जांच के लिए सबसे पहले वायरस का एचआईवी टेस्ट किया जाता है। इसके पॉजिटिव होने पर एड्स की सूरत में 'डब्ल्यूबीटी' या वेस्टर्न ब्लॉट टेस्ट किया जाता है। '

क्या हैं लक्षण एड्स के शुरुआती लक्षण इतने सामान्य होते हैं कि उन्हें चिन्हित कर पाना बड़ा मुश्किल होता है, क्योंकि ये दूसरे बहुत सामान्य रोगों के लक्षणों से मिलते-जुलते हैं जैसे खांसी, हल्का बुखार, गला खराब होना तथा दस्त लगना। लेकिन कुछ दूसरे ऐसे लक्षण भी हैं जिनसे इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। इन लक्षणों में- वजन में लगातार कमी और वजह का पता न चलना। रुक-रुक कर आने वाला बुखार जो उतरने का नाम ही न ले। सूजी हुई ग्रं थियां। लगातार पतले दस्त जो रुकने का नाम ही न ले रहे हों। शरीर में लगातार दर्द रहना और रात में भारी पसीना आना। मुंह और भोजन की नली में सफेद दाग तथा छाले। क्षय, निमोनिया और कैंसर जैसे रोगों का हमला।